P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6 * ISSUE-5 * (Part-1) January- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

डॉ. मदन केवलिया : व्यक्तित्व और कृतित्व

उमा जाँगिड़
शोध अध्येता
हिन्दी विभाग,
भगवंत विश्वविद्यालय,
सीकर रोड़, अजमेर, भारत

एजाज अहमद कादरी
शोध निर्देशकः
हिन्दी विभाग,
राजकीय डूँगर महाविद्यालय
बीकानेर, भारत

सारांश

"डॉ. मदन केवलिया : व्यक्तित्व और कृतित्व" में इनके साहित्य में वर्णित जीवन और समाज की विविध छवियों का विवेचन बड़े ही मनोरम ढंग से किया गया है। उन्होंने साहित्य की प्रत्येक विधा पर लिखा है, जिसमें नवगीत उनका प्रिय विषय रहा है। डॉ. केवलिया बहुभाषाविद् भी हैं इन्होंने उर्दू, अंग्रेजी, राजस्थानी, हिन्दी आदि भाषाओं में लिखा है। उनकी आत्मकथा राजस्थानी और हिन्दी दोनों में लिखित है। डा. केवलिया ने अपने काव्य संग्रह 'वक्त भी हैरान है' की भूमिका में 'कविता' को परिभाषित करते हुए लिखा है – "कविता वक्त की सच्चाइयों को व्यक्त करने का उपक्रम है।"[1]

इसके दो खण्ड हैं – (क) फ्रिज से ठण्डे सम्बन्ध (ख) जब कभी।

जीवन को परिभाषित करते हुए लेखक लिखता है कि जीवन कभी–कभी रणभूमि सा लगता है। तन्हाई का मैदान सूनी मरूभूमि–सा लगता है –

"तराजू चढ़ी जिंदगी
तुली मौत के बाटों से
पैसों में बिकी जिंदगी
मानवता के हाटों में
प्यार अब खत्म
रहे शिकवे–गिले।"[2]

इस प्रकार लेखक ने सम्पूर्ण सामाजिक परिवेश, परिस्थिति तथा मनोभावों को अपने लेखन से वाणी दी। आज के गीतों के सम्बन्ध में चन्द्रसेन विराट ने कहा था – "वह पूर्वागृह ग्रसित रूढ़ विधानों की केंचुलि उतार रहा है। सच्ची भावुकता एवं मांसल रोमांस की चाटुकारिता छोड़ रहा है। युगबोध एवं मनुष्य के आधुनिक तनाव–खिंचाव गीत में व्यक्त हो रहे हैं।"[3]

इस प्रकार डॉ. केवलिया उस विराट् समुद्र की तरह है जो अपने अंदर अथाह जलराशि अर्थात् काव्य राशि समेटे हुए है और अपनी लहरों रूपी काव्य की विविध विधाओं को अपने कलम से शब्दबद्ध करते रहेंगे और आने वाले युवा लेखकों को प्रेरणा देते रहेंगे।

मुख्य शब्द : कविता, जिजीविषा, एकाकीपन, अन्तर्मन, मनोव्यथा, उदासीनता, व्यंग्य, व्यंजना, समसामयिक।

प्रस्तावना

डॉ. केवलिया ने जीवन को परिवर्तन की पाठशाला माना है। वे उत्तर आधुनिक विचारकों की तरह साकल्य–परकता (Totality) में विश्वास नहीं करते हैं। उनका भी यही विचार है कि परिवर्तन ही जीवन है, स्थिरता मृत्यु है – कवि प्रसाद। वे भाव और भाषा के कवि है –

"करे कल्पनाएं और
बने नव कथाएं और
मुख पर आए चमक नई
गीत गुनगुनाएं और।"[4]

इस प्रकार डॉ. केवलिया का काव्य अद्भुत प्रेरणा का स्रोत रहा है जिसमें जीवन की प्रत्येक परिस्थिति के लिए आशा का स्वर विद्यमान है तथा युवाओं के लिए एक संदेश भी है कि जीवन में नैतिक मूल्यों को अपनाकर जीवन के सार को ग्रहण कर उसे यथार्थ की कसौटी पर खरे उतरे।

अध्ययन के उद्देश्य

डॉ. मदन केवलिया के काव्य संग्रह 'वक्त भी हैरान' में जीवन की विविध छवियों का अंकन बड़े ही मनोरम ढंग से किया गया है। डॉ. मदन केवलिया के साहित्य के माध्यम से समकालीन परिस्थितियों का विश्लेषण यथार्थ रूप में किया गया है।

उनका साहित्य सांस्कृतिक परम्परा के साथ–साथ सामाजिक सरोकारों को अपने काव्य में वर्णित किया गया है, यह विषय भी इनके काव्य के प्रति आकर्षण का मुख्य बिन्दु रहा है।

इनके काव्य में राष्ट्र के प्रति उद्‌गारों को भी व्यक्त किया गया है। प्रत्येक विसंगतियों को व्यंग्य के माध्यम से प्रस्तुत कर उन पर तीखा प्रहार किया गया है। उसके उन्मूलन का मार्ग भी प्रशस्त किया गया है।

साहित्यावलोकन

महाकवि पृथ्वीराज : "व्यक्तित्व और कृतित्व", भूपतिराम साकरिया, वर्ष 1975

"समाज और सरकार द्वारा उपेक्षित इस समृद्ध भाषा के मध्यकालीन कवि पृथ्वीराज राठौड़ के उदात्त व्यक्तित्व और उनके उत्कृष्ट कोटि के वाङ्मय को प्रकाशित करने की धुन लगी रही।"[5]

छन्द गाहा – इसमें उन्होंने भगवती जोगमाया की नृत्यलीला का अनोखा वर्णन किया है –

"गुज्जे गुहिर नद्द गैणं गण त्रहि कुडतां
माहिण गुज्जै।
तिण नाटारंभ सुर नरत्रिय नचै दहवह
दहवह वयण सुवज्जै।।"

"राजस्थानी भाषा के इस स्वर्णयुग में अवतरित महाराज पृथ्वीराज राठौड़ ने जिस विषय छंद, अलंकार शैली और रस को छुआ, वही जैसे भाग्यशाली हो गए।"

'दिनकर' साहित्य में व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति – डॉ. रमारानी सिंह, वर्ष 1984

"दिनकर का अन्तर्द्वन्द्व उनको जनजीवन के यथार्थ के नजदीक लाता गया, जनता में फैली गरीबी, अशिक्षा और शोषण की पीड़ा उनकी 'रेणुका' से लेकर 'हुंकार' तक की रचनाओं में प्रतिध्वनित होती है।"[6]

डॉ. सावित्री सिन्हा के शब्द शत–प्रतिशत सत्य है – "दिनकर के व्यक्तित्व में धरती पुत्र का आत्मविश्वास और दृढ़ता, साहित्यकार की अनुभूति प्रवणता, दार्शनिक का तत्त्व विवेचन तथा राजपुरुष का ओज और तेज है।"[7]

दिनकर के आत्मविश्वास, जागरूकता और कर्मनिष्ठता को व्यक्त करती 'कुरुक्षेत्र' की ये पंक्तियां –

"अकर्मण्य पण्डित हो जाता
अमर नहीं रोने से
आयु न होती क्षीण किसी की
कर्मभार ढोने से।।"[8]

उदयशंकर भट्‌ट : व्यक्तित्व, कृतित्व और जीवन–दर्शन, सत्येन्द्र चतुर्वेदी, वर्ष 1986

सच्चा और निरपेक्ष आत्मविश्लेषण भट्‌ट जी के व्यक्तित्व की सबसे बड़ी विशेषता है।

"जो कुछ मैंने लिखा धरोहर है वही
जाने कितना व्यर्थ और कितना सही
जो कुछ सुंदर और सत्य देवि का दान है
बाकी है सब व्यर्थ सृजन अभिमान है।"[9]

यह उनकी बहुमुखी प्रतिभा का ही परिचायक है कि उन्होंने लगभग 35 वर्ष के साहित्यिक जीवनकाल में 50 पुस्तकों की रचना की। काव्य, नाटक, निबंध, उपन्यास, समालोचना आदि विविध क्षेत्रों में अपनी विदग्ध लेखनी से समृद्ध किया।[10]

पं. बनारसीदास चतुर्वेदी : व्यक्तित्व और कृतित्व, डॉ. कालीचरण 'स्नेही', वर्ष 1993

"पत्रकार पितामह और पत्र लेखन आचार्य, साहित्य मनीषी–पद्मभूषण स्व. पं. बनारसीदास चतुर्वेदी का जीवन–चरित्र भागीरथी के समान पावन है। शहीदों की यशरक्षा, प्रवासी भारतीयों की सेवा और साहित्य सेवियों की कीर्तिरक्षा को जीवन का मिशन बना लेने वाले इस अलमस्त 'मलूकदास' ने संस्मरण व रेखाचित्र विधा का प्रवर्तन कर हिन्दी की उत्कृष्ट सेवा की है।"[11]

"डॉ. कालीचरण 'स्नेही' ने इस साहित्य महर्षि पर शोधात्मक ग्रंथ तैयार कर हिन्दी संसार को उनको अवदान से जोड़ने का समर्थ प्रयास किया है। यह शोध प्रबंध पूरी तरह से प्रामाणिक तो है ही, प्रेरक एवं संग्रहणीय–पठनीय भी है। स्व. चतुर्वेदी जी आजीवन 'स्वान्त सुखाय' साहित्यिक श्राद्ध करते–कराते रहे, डॉ. 'स्नेही' ने श्राद्धकर्ता का साहित्यिक श्राद्ध कर पुण्य लाभ पा लिया। शोध कर्म एक तपस्या है, ऐसी तपस्या जिसमें तपकर 'शब्द' ब्रह्मस्वरूप हो जाते हैं।"[12]

डॉ. प्रतापनारायण टण्डन : व्यक्तित्व और कृतित्व, डॉ. हणमन्तराव ज्ञानदेव पाटील, वर्ष 1998

"डॉ. टण्डन हिन्दी साहित्य के सशक्त और लोकप्रिय लेखक, समीक्षक, नाटककार तथा कवि है। आधुनिक हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में डॉ. टण्डन का योगदान अपनी मौलिकता व विशिष्टता के कारण महत्त्वपूर्ण है। यह शोध प्रबंध हिन्दी के उपेक्षित किन्तु मौलिक प्रतिभा से सम्पन्न साहित्यकार के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का सर्वांगीण अनुशीलन है।"[13]

"डॉ. टण्डन एक मानववादी कलाकार है। इनका समस्त साहित्य सृजन सादेश्य है। इनकी कला, कला के लिए नहीं वरन् जीवन के लिए है। सिद्ध कथाकार, नाटककार, भावुक कवि तथा प्रबुद्ध समीक्षक डॉ. टण्डन के अनुसंधाता का रूप इनकी तीन रचनाओं 'हिन्दी उपन्यास में वर्ग भावना', 'हिन्दी उपन्यास में कथाशिल्प का विकास' तथा 'समीक्षा के मान और हिन्दी समीक्षा की विशिष्ट प्रवृत्तियां' में देखा जा सकता है।"[14]

निश्कर्श

इस प्रकार डॉ0 केवलिया ने अपने काव्य में वर्तमान जीवन की बेचारगी, एकाकीपन, भागदौड़ को सामाजिक सरोकारों से जोड़ते हुए अपनी लेखनी के माध्यम से व्यंग्य की धारा को शब्दबद्ध किया है, वही उनकी कविताओं के अनुभूतिपक्ष के साथ अभिव्यक्ति पक्ष भी अत्यन्त नवीनता के साथ उकेरा। डॉ0 केवलिया ने कविता को बड़े सन्दर शब्दों में व्यक्त किया है–''कविता वक्त की सच्चाईयों को व्यक्त करने का उपक्रम है।''

डॉ0 केवलिया ने अपने काव्य संग्रह में जहॉ दुःख, उदासीनता, एकाकीपन जैसी मानवीय संवेदना को अपनी कलम के माध्यम से शब्दबद्ध कियाहै, वहीं जीवन की विसंगतियों को जिजीविषा के स्वर के रूप में मुखरित किया है।

डॉ0 केवलिया ने अपनी कविताओं के माध्यम से जीवन के साररूप को व्यक्त किया है। एक लेखक की कलम एक ऐसी सशक्त माध्यम है जिसके द्वारा वह संसार और जीवन के प्रत्येक पक्ष को बड़ी सहजता से शब्दों की माला में पिरोकर पाठक के समक्ष प्रस्तुत कर देता है।

अंत टिप्पणी

1. *'वक्त भी हैरान है' काव्य संग्रह, डॉ. मदन केवलिया, भूमिका से*
2. *साहित्य पारिजात, सितम्बर, 1997, पृ. 20*
3. *नवगीत इतिहास और उपलब्धि, सं. सुरेश गौतम, पृ. 136*
4. *मधुमती (डॉ. संजय चौहान का लेख), मार्च, 2006, पृ. 17*
5. *महाकवि पृथ्वीराज राठौड़, व्यक्तित्व और कृतित्व, 1975, भूपतिराम साकरिया, पंचशील प्रकाशन, फिल्म कॉलोनी, जयपुर, भूमिका से*
6. *'दिनकर' साहित्य में व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति, 1984, डॉ. रमारानी सिंह, अमित प्रकाशन, के.बी., 97, कवि–नगर, गाजियाबाद, भूमिका (गोपाल कृष्ण कौल द्वारा लिखित) से, पृ. 7*
7. *डॉ. सावित्री सिन्हा, युगचारण दिनकर, पृ. 22*
8. *'दिनकर' साहित्य में व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति, 1984, डॉ. रमारानी सिंह, अमित प्रकाशन, के.बी., 97, कवि–नगर, गाजियाबाद, पृ. 79; दिनकर 'कुरूक्षेत्र', पृ. 111*
9. *उदयशंकर भट्ट : व्यक्तित्व, कृतित्व और जीवनदर्शन, 1986, सत्येन्द्र चतुर्वेदी, देवनागर प्रकाशन, चौड़ा रास्ता, जयपुर, उपसंहार से*
10. *उदयशंकर भट्ट : व्यक्तित्व, कृतित्व और जीवनदर्शन, 1986, सत्येन्द्र चतुर्वेदी, देवनागर प्रकाशन, चौड़ा रास्ता, जयपुर, पृ. 57*
11. *पं. बनारसीदास चतुर्वेदी : व्यक्तित्व और कृतित्व, 1993, डॉ. कालीचरण 'स्नेही', आराधना ब्रदर्स, 124/152, सी–ब्लॉक, गोविन्द नगर, कानपुर, भूमिका से*
12. *पं. बनारसीदास चतुर्वेदी : व्यक्तित्व और कृतित्व, 1993, डॉ. कालीचरण 'स्नेही', आराधना ब्रदर्स, 124/152, सी–ब्लॉक, गोविन्द नगर, कानपुर, प्रकाशकीय से, कृष्ण चन्द्र शुक्ल द्वारा लिखित (जन्म शताब्दी वर्ष 1992)*
13. *डॉ. प्रतापनारायण टण्डन : व्यक्तित्व और कृतित्व, 1998, डॉ. हणमन्तराव पाटील, विद्या प्रकाशन, प्रकाशकीय से*
14. *डॉ. प्रतापनारायण टण्डन : व्यक्तित्व और कृतित्व, 1998, डॉ. हणमन्तराव पाटील, विद्या प्रकाशन, उपसंहार, पृ. 288*